

प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा बनाम अँग्रेजी

अजीत मोहन्ती

उड़ीसा के गजपति जिले के तुमूलो गाँव की साओरा जनजाति की पिंकी जब पैदा हुई थी, तो उसके माता–पिता खुश थे। "हमारी पिंकी स्कूल जाएगी", पिता ने कहा। पिंकी की माँ यह सुनकर खुश हुई थी। "यह तो बहुत अच्छा होगा। हम तो इतने सौभाग्यवान नहीं थे, लेकिन पिंकी जरूर शिक्षा पाएगी", उसने कहा। पिंकी बड़ी हुई, उसने चलना शुरू किया और जल्दी ही वह अपने पिता की उँगली पकड़कर गाँव के बाजार जाने लगी। अपने खेलने–कूदने के पूरे समय के दौरान वह हँसती रहती और कुछ शब्द बोलती, बहुत स्पष्ट तो नहीं लेकिन आसपास के सभी लोग उसकी तुतलाहट से खुश प्रतीत होते। जल्दी ही उसने अपने माता–पिता, गाँव वालों और दूसरे बच्चों से बात करने के लिए साओरा भाषा में टूटे–फूटे वाक्य बोलना शुरू कर दिए। वह अपने माता–पिता को साओरा में सम्बोधित करती, गाँव के पेड़–पौधों, फलों, फूलों और जानवरों को भी साओरा नामों से ही बुलाती थी। अपने पिता के कन्धों पर घूमते हुए, वह उनके साथ बगाडा(उड़ीसा में आदिवासी जनजातियों के खेतों का एक प्रकार) जाते वक्त रास्ते में दिखने वाली सभी तितलियों को बड़ी प्रसन्नता से गिनती जाती। गाँव वाले पिंकी से बड़े प्रभावित थे; "यह बड़ी होशियार लड़की है!" वे कहते थे।

एक दिन गाँव के शिक्षक ने कहा, "वह छह साल की हो चुकी है। उसे स्कूल भेजो।" पिंकी के माता–पिता उसे दाखिले के लिए स्कूल ले जाते हुए बड़े खुश थे। पिंकी भी बहुत खुश थी। उसे अपने स्कूल से नई किताबें और कॉपियाँ मिलीं और उसने बड़े गर्व से उन्हें अपनी माँ को दिखाया माँ बोली, "तुम्हारे शिक्षक तुम्हें इन किताबों को पढ़ना सिखाएँगे। मुझे तो पढ़ना आता ही नहीं।"

पिंकी रोज स्कूल जाती थी। लेकिन, धीरे–धीरे वह चुप होती चली गई। "तुमने स्कूल में क्या किया?" एक दिन उसकी माँ ने पूछा। पिंकी ने कोई जवाब नहीं दिया उसके पिता ने कहा, "क्या तुम्हारे शिक्षक ने तुम्हें यह किताब पढ़ना सिखाई? मुझे एक कहानी पढ़कर सुनाओ।" पिंकी चुप रही। धीरे–धीरे वह और ज्यादा चुप होती गई और उदास रहने लगी। वह स्कूल जाने में भी नियमित नहीं रह गई।

एक दिन पिंकी के शिक्षक बाजार में उसके पिता से टकरा गए, "पिंकी नियमित रूप से स्कूल नहीं आती। और जब भी मैं उससे कोई सवाल पूछता हूँ, वह अपना सिर झुका लेती है और कुछ बोलती नहीं।" उसके पिता को यह सुनकर अच्छा नहीं लगा। "तुम स्कूल क्यों नहीं जाती हो? शिक्षक को जवाब भी नहीं देती, ऐसा क्यों?" पिता ने घर आकर पिंकी से पूछा। "शिक्षक जो कुछ भी कहते हैं वह मुझे समझ नहीं आता। मैं तो किताबों में सिर्फ चित्र देखती हूँ, शिक्षक जो भी किताब में से पढ़ते हैं, वह मुझे समझ नहीं आता।" उसके पिता उसकी बात समझ गए। स्कूल के शिक्षक उड़िया में बोलते हैं जो पिंकी को समझ नहीं आती। पिता को खुद अपना बचपन याद आ गया; उन्होंने भी भाषा की इसी कठिनाई के चलते स्कूल छोड़ दिया था। वह भाषा साओरा नहीं थी। जल्दी ही पिंकी ने भी स्कूल जाना बन्द कर दिया।

पिंकी और उसके पिता अकेले नहीं हैं। लाखों बच्चे ऐसे स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो बच्चों पर कोई भाषा थोप देते हैं और उस भाषा की अनदेखी करते हैं जिसमें उन्होंने बोलना, अपने माता–पिता को सम्बोधित करना, पेड़–पौधों, फलों, फूलों, जानवरों, पर्यावरण और अपने परिवार तथा सदस्यों को जानना सीखा हो। किसी

[1]Bagada is a special cultivation site for the tribal people in Odisha.

बच्चे की प्रारम्भिक भाषा उसकी पहली पहचान की, उसके सभी शुरुआती अनुभवों और सीखों की, अपने दोस्तों व बड़ों के साथ उसके सम्बन्धों, और अपनी समझ और समाधानों को तलाशने की उसकी कोशिशों की भाषा होती है। यह भाषा उसके घर, परिवार, समुदाय और गाँव के लिए पर्याप्त होती है, और वह उसे अपनी सामाजिक दुनिया के साथ प्रभावशाली ढंग से तालमेल बनाकर चलने की ताकत देती है। लेकिन, जब एक बच्चा स्कूल में दाखिल होता है, तो सब कुछ बदल जाता है। स्कूल उसके लिए अपने दरवाजे खोल तो देता है पर उसके और उसकी कक्षा के बीच एक अदृश्य और मजबूत दीवार होती है। स्कूल की प्रबल भाषा के आगे अचानक उसकी अपनी भाषा बेकार और छोटी बन जाती है। उसकी सारी समझ, उसके अनुभव और उसके स्रोतों का मोल अचानक से घट जाता है। उसकी भाषा अब उसका सबल पक्ष नहीं रह जाती बल्कि वह एक बोझ बन जाती है। स्कूल की भाषा उसके लिए अनजान होती है और उसका उसके बचपन, उसके अनुभवों, उसकी रचनाओं और उसके ज्ञान से कोई वास्ता नहीं होता। वह एक ऐसी भाषा के बोझ को कैसे सम्भालेगा जो उसकी पहचान का अवमूल्यन कर देता हो और उसे अपने ही अनुभवों से दूर कर देता हो? इसलिए कोई अचरज की बात नहीं कि कई बच्चे इस अपरिचित भाषा के बोझ तले स्कूल छोड़ने को मजबूर हो जाते हैं।

यह जरूर सच है कि आज की दुनिया में, खासतौर पर हमारे जैसे बहुभाषाई देश में, एक भाषा पर्याप्त नहीं हो सकती, स्कूल की पढ़ाई में कई भाषाओं का शामिल होना जरूरी है – मातृभाषा, उस क्षेत्र की भाषा जैसे तमिल, पंजाबी या बंगाली, राष्ट्रीय स्तर की भाषाएँ जैसे हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा जैसे अँग्रेजी। पर, बच्चों को स्कूल में ऐसी भाषा क्यों सीखना चाहिए जो उन्हें पहले से ही आती हो? हम किसी दूसरी बड़ी भाषा को सिखाने की शुरुआत कुछ जल्दी क्यों नहीं कर सकते? मातृभाषा तो जरूरी है क्योंकि बच्चों की प्रभावी स्कूली शिक्षा के लिए आधारभूत ज्ञान का शाब्दिक संकेतों में निरूपण (एनकोडिंग) उनको समझ में आने वाली और उनकी अभिव्यक्ति की भाषा में ही किया जाता है। यह भाषा उन्हें स्कूल के लिए तैयार कर देती है, पर इसके साथ ही, उन्हें भी अपने भाषा कौशलों को और निखारना चाहिए। भले ही बच्चे अपनी शुरुआती भाषा में दक्ष प्रतीत हों, उसका प्रमुख उपयोग उनके घर और समुदाय के एकदम निकट के परिवेश में सन्निहित सामाजिक और अन्तर्वैयक्तिक संवादों में ही होता है। दूसरी तरफ, स्कूल के सीखने में जटिल और गूढ़ अवधारणाओं को समझने, तथा इन अवधारणाओं में महारत हासिल करने, प्रश्नों को सुलझाने, खुद की सोच को नियंत्रित करने और स्वयं भाषा (सोच के विषय के रूप में) के बारे में सोचने के लिए भाषा का उपयोग करना शामिल रहता है। स्कूली शिक्षा और प्रारम्भिक साक्षरता शिक्षा बच्चों को भाषा के सामाजिक और प्रासंगिक उपयोग के परे जाकर व्यवस्थित सोच, संज्ञान और अकादमिक शिक्षा के लिए उपयोग के ऊँचे स्तरों तक पहुँचने में समर्थ बनाती है। बच्चों की प्रारम्भिक भाषा इस संज्ञानात्मक और अकादमिक स्तर के मुताबिक विकसित होना चाहिए। उनके पास शैक्षिक उपलब्धि के लिए भाषा के उपयोग के बारे में सोचने के लिए तथा दूसरी भाषाएँ सीखने के लिए योग्यता होना चाहिए।

स्कूल में दाखिले होने पर, भाषाई अल्पसंख्यक और जनजातीय समुदायों के बच्चों पर एक ऐसी प्रबल स्कूली भाषा लाद दी जाती है जिससे उनका बहुत मामूली परिचय होता है या कोई परिचय नहीं होता। समझ न आने के बोझ और उसके परिणामस्वरूप सामने आने वाली स्कूली असफलता के अलावा स्कूली भाषा इन बच्चों के भाषाई कौशलों को सामान्य अन्तर्वैयक्तिक संवाद से आगे नहीं ले जा पाती, और इसका उनकी मातृभाषा पर नकारात्मक या ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि प्रधान स्कूली भाषा को सीखने के चक्कर में उनके मातृभाषा कौशल क्षीण हो जाते हैं। जहाँ किसी भाषा में बुनियादी अन्तर्वैयक्तिक संवाद कौशल के विकास में दो से तीन साल लग जाते हैं, वहीं संज्ञानात्मक और अकादमिक भाषा कौशल कहीं अधिक धीरे विकसित होते हैं और उसमें करीब छह से आठ साल लगते हैं। इस प्रकार, मातृभाषा को कम से कम छह सालों तक प्रारम्भिक शिक्षा तथा औपचारिक स्कूली शिक्षा की भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए, ताकि बच्चे शैक्षणिक सफलता को सुनिश्चित करने के साथ ही ऊँचे दर्जे की सोच के लिए, प्रश्नों व समस्याओं को हल करने के लिए और बहुभाषाई दक्षता के लिए भाषा का इस्तेमाल करने की क्षमता विकसित करें। दरअसल, मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा होने से बाद में अन्य भाषाएँ सीखने में कोई अड़चन नहीं आती।

यद्यपि बच्चे उनके विकास के प्रारम्भ में कई भाषाओं में संवादात्मक और सामाजिक अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित कर सकते हैं, पर वे दूसरी भाषाओं में ऊँचे दर्जे की साक्षरता और अकादमिक कौशल तब कहीं ज्यादा तेजी से हासिल करते हैं जब उनके मातृभाषा सम्बन्धी कौशल प्रारम्भिक सामाजिक उपयोग से कहीं ज्यादा विकसित होते हैं। यही मातृभाषा पर आधारित बहुभाषाई शिक्षा का बुनियादी सिद्धान्त है।

बच्चे जब स्कूल जाना शुरू करते हैं तो वे कोरी स्लेट नहीं होते, बल्कि उनके पास ज्ञान का अच्छा–खासा भण्डार होता है। उनकी भाषा, अनुभव और समझ वे संसाधन होते हैं जिनके आधार पर वे प्राथमिक स्कूलों में भाषा और साक्षरता, गणितीय सिद्धान्तों, पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता के क्षेत्रों में आगे विकास करते हैं। प्रारम्भिक बाल्यावस्था और अनौपचारिक सांस्कृतिक अनुभव से औपचारिक स्कूली शिक्षा की तरफ बढ़ना हर बच्चे के लिए एक महती चुनौती होती है। घर से स्कूल की दूरी केवल भौतिक नहीं होती, बल्कि यह स्कूली शिक्षा के लिए संज्ञानात्मक, क्रियात्मक और सामाजिक तैयारी की मनोवैज्ञानिक दूरी भी होती है। इसलिए, स्कूल में दाखिला लेने से पहले, 2 से 6 साल की उम्र के बीच, बच्चों का मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से तैयार होना जरूरी है ताकि वे औपचारिक स्कूली शिक्षा का लाभ ले सकें। प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा ऐसी ही तैयारी के विकास के लिए होती है, जिसमें भाषा एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा, सामाजिक संवादों के कौशलों से निर्मित हुई बच्चों की भाषा के विकसित होकर उसका सोचने और कक्षा में प्रभावी ढंग से सीखने के लिए उपयोग करने के बीच सेतु बनाने का काम करती है। 20 सितम्बर, 2013 को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की राष्ट्रीय नीति को स्वीकार किया जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सम्पूर्ण विकास और समान मौके देने वाली स्कूली शिक्षा के लिए जरूरी तैयारी के रूप में बच्चे की मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने को अनिवार्य बनाती है। छह साल से कम उम्र के लगभग 16 करोड़ बच्चों में से 4.5 करोड़ बच्चे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के निजी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, जिनका शुल्क देने के लिए उनके माता–पिता के पास साधन होते हैं। करीब 7.5 करोड़ बच्चे सरकार की समेकित बाल विकास योजना के ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों (जैसे आँगनवाड़ी) में हैं। बाकी 4 करोड़ बच्चों के लिए ई.सी.सी.ई. का कोई मौका नहीं है।

इस प्रकार, प्रारम्भिक बाल्यावस्था वाले वर्षों के दौरान मानव संसाधनों और सम्भावनाओं के विकास के अवसरों में एक अन्यायपूर्ण भेदभाव मौजूद है। आशा है कि यह नीति पत्र जो न्यूनतम ई.सी.सी.ई. मानकों को निर्धारित करता है, ऐसे भेदभाव से प्रभावशाली ढंग से निपट सकेगा। नीति पत्र का खण्ड 5.2.4 कहता है कि, "बच्चे की मातृभाषा या घर की भाषा ही ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों के क्रियाकलापों की प्राथमिक भाषा होगी"। नीति पत्र में यह भी कहा गया है कि इस उम्र में छोटे बच्चों की कई भाषाएँ सीखने की क्षमता को देखते हुए, मौखिक रूप में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय भाषा या अँग्रेजी से भी जरूरत के मुताबिक परिचय कराने की सम्भावना को टटोला जा सकता है। इस प्रकार, ई.सी.सी.ई. नीति बच्चे के सोचने और तर्क करने के कौशलों को व्यवस्थित रूप देने के लिए तथा संज्ञानात्मक और शैक्षिक विकास के लिए मातृभाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करती है, और साथ ही शोध से प्राप्त इन सशक्त जानकारियों को भी स्वीकार करती है कि बहुभाषाई बच्चे अपने एकभाषाई साथियों की तुलना में ज्यादा बुद्धिमान और सृजनशील होते हैं। समस्या बहुभाषावाद के विकास के साथ नहीं है; समस्या गैर मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा देने से खड़ी होती है।

दुर्भाग्यवश, माता–पिता अधीर होते हैं – वे अपने बच्चे की शिक्षा में अँग्रेजी को बहुत जल्दी ले आना चाहते हैं। अँग्रेजी सत्ता, प्रगति और आर्थिक अवसरों की भाषा प्रतीत होती है, और इसलिए लोगों को घरों में तथा प्रारम्भिक बाल्यावस्था की शिक्षा तथा स्कूली शिक्षा में अँग्रेजी को जल्दी से जल्दी लाने की सनक है। बहुत छोटे और मासूम/अविकसित बच्चों को अँग्रेजी पढ़ाने की लालसा इस कदर व्याप्त है कि अगर कोई माँ के गर्भ में पल रहे शिशुओं के लिए भी जन्म–पूर्व अँग्रेजी शिक्षा देने का प्रस्ताव रखे, जैसा कि पौराणिक अभिमन्यु ने युद्धकला सीखी थी, तो इसे लेने के लिए भी लम्बी कतारें लग जाएँगी। अँग्रेजी के लिए यह मौजूदा पागलपन कोरी नासमझी है और शिक्षा के इस

जाने–पहचाने सिद्धान्त के विपरीत भी है कि मातृभाषा ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा अँग्रेजी सहित कई भाषाओं की प्रभावी शिक्षा का राजसी मार्ग है। आधुनिक अभिमन्युओं को इतनी जल्दी अँग्रेजी की जरूरत नहीं है; उन्हें अच्छी देखभाल, संस्कार और मातृभाषा–आधारित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है।







अजीत मोहन्ती एन.एम.आर.सी. के मुख्य सलाहकार हैं। पूर्व में वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में प्राध्यापक एवं आई.सी.एस. एस.आर. के राष्ट्रीय फैलो थे। वे फुलब्राइट अतिथि प्राध्यापक (कोलम्बिया विश्वविद्यालय), फुलब्राइट सीनियर स्कॉलर (विस्कॉन्सिन), किलम स्कॉलर (अलबर्टा) भी रह चुके हैं। बहुभाषाई शिक्षा पर अपने काम के लिए प्रसिद्ध मोहंती ने नेपाल और उड़ीसा (भारत) के लिए एम. एल.ई. नीति तैयार की। वे भारत की राष्ट्रीय मनोविज्ञान अकादमी तथा अमेरिका की एसोसिएशन ऑफ साइकलॉजिकल साइंस के फैलो हैं। उनसे ajitmohanty@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी